

(सप्तमस्कन्धार्थ ऊतिलीला)

सप्तम स्कन्धमें ऊतिलीलाका निरूपण किया गया है. 'ऊति' पद जीवात्माके भीतर किये गये कर्मोंकी वासनाओंके आतानवितानात्मक जालके अर्थमें प्रयुक्त हुवा है. अपवादरूपा पुष्टिलीला, क्योंकि, पोषणरूपा है अतः उत्सर्गरूपा मर्यादाके निरूपण बिना उस पोषणलीलाका भलीभांति बोध शक्य नहीं, अतः एक मर्यादा निर्धारित होनी चाहिये कि जीवात्माओंकी स्वयंद्वारा किये गये कर्मोंकी वासनाकी मर्यादाके अनुरोधवश कैसी गति सम्भावित थी और परमात्माने अपनी पोषणलीलाद्वारा कैसे जीवात्माका रक्षण किया ! यदि कर्मवासनाकी औत्सर्गिकी मर्यादा स्थापित करनेकी लीला स्वयं भगवान्के द्वारा निर्धारित न की गयी हो तो भगवान्में उसके अपवादार्थ पुष्टिलीला प्रकट करनेकी सामर्थ्य भी सन्देहास्पद बन सकती है. अतः पुष्टिलीलाके बारेमें पक्षपातके दोषके परिहारार्थ भी ऊतिलीला प्रासंगिक बन जाती है.

(प्रकरणार्थ)

जीवात्माओंके भीतर विसर्गलीलाके अन्तर्गत निर्धारित धर्माधर्म अर्थानर्थ कामाकाम मुक्ति-संसृति रूपा मर्यादाओंके अनुरूप या तो आधिभौतिक आध्यात्मिक और आधिदैविक अथवा असद्वासना सद्व्वासना और मिश्रवासना का जाल बुना हुवा रहता है. अतः तदनुसार इस स्कन्धमें भी प्रमुखतया असद्वासना सद्व्वासना और मिश्रवासना रूप तीन प्रकरणोंका ही संनिवेश किया गया है.

(अध्यायार्थ)

इसके अलावा जीवात्माके सारे कर्म देहाध्यास प्राणाध्यास इन्द्रियाध्यास और अन्तःकरणाध्यास मूलक होते हैं. और ये चारों अध्यास स्वरूपाज्ञान या स्वरूपविस्मृति के बिना शक्य नहीं. अतः पंचपर्वा अविद्याके पांच पर्वोंके अनुरूप इन तीनों प्रकरणोंमें पांच-पांच अध्याय योजित किये गये हैं. न केवल इतना अपितु भगवद्गीताके अनुसार प्रत्येक कर्म जो जीवात्मा कर पाती है, उसमें अधिष्ठान कर्ता करण पृथक्-पृथक्चेष्टा तथा दैव यों पांच कर्मघटक तत्त्व प्रतिपादित किये गये हैं. तदनुरूपतया भी प्रत्येक प्रकरणमें पांच-पांच अध्यायोंका योजन उचित लगता है.

यों सब मिला कर इस स्कन्धमें पंद्रह अध्याय योजित किये गये हैं. अतः प्रथम पांच अध्याय असद्वासनाके प्रकरणमें. द्वितीय पांच अध्याय सद्व्वासनाके प्रकरणमें और तृतीय पांच अध्याय मिश्रवासनाके प्रकरणमें योजित हुवे हैं.

(ऊतिलीलाके अन्तर्गत १-५ अध्यायोंवाला प्रथम असद्वासनाप्रकरण)

(१) असद्वासनाके प्रकरणमें वैकुण्ठमें सनकादि ऋषिओंके अतिक्रम करनेवाले असद्वासनाके कार्यरूप औद्धत्यका निरूपण प्रथम अध्यायमें किया गया है.

(२) ऊतिलीलाके असद्वासनाके प्रकरणमें सभी लोकोंको पीड़ा प्रदान करनेवाले असद्वासनाके कार्यरूप तपका निरूपण इस द्वितीय अध्यायमें किया गया है.

(३) ऊतिलीलाके असद्वासनाके प्रकरणमें असद्वासनाके कार्यरूप तपोरूप स्वपीड़ाका निरूपण इस तृतीय अध्यायमें किया गया है.

(४) ऊतिलीलाके असद्वासनाके प्रकरणमें अत्यन्त भोगसम्पन्नताके बावजूद अतृप्तिरूपा असद्वासनाकी कार्यरूपा अनिर्वृतिका निरूपण इस चतुर्थ अध्यायमें किया गया है.

(५) ऊतिलीलाके असद्वासनाके प्रकरणमें भगवद्भक्तोंको असद्वासनाके कार्यरूप पीड़ाप्रदानका निरूपण इस पांचवे अध्यायमें किया गया है.

(ऊतिलीलाके अन्तर्गत ६-१० अध्यायोंवाला द्वितीय सद्व्वासनाका प्रकरण)

ऊतिलीलाके अन्तर्गत सद्व्वासनाके प्रकरणमें भी पांच अध्याय योजित हुवे हैं :

(६) ऊतिलीलाके सद्व्वासनाके प्रकरणमें सर्वमोचक सद्व्वासनाकार्यरूप ज्ञानहेतु दयाका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(७) ऊतिलीलाके सद्व्वासनाके प्रकरणमें सर्वमोचक सद्व्वासनाकार्यरूपा क्रियाहेतु सानुभावरूपा महत्कृपाका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(८) ऊतिलीलाके सद्व्वासनाके प्रकरणमें अतिदुःखहेतुओंके नाशक भगवत्प्रादुर्भावानुकूल सद्व्वासनाकार्यरूपा क्रियाका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(९) ऊतिलीलाके सद्व्वासनाके प्रकरणमें जीवात्माओंके सर्वथा भगवत्साम्मुख्यका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(१०) ऊतिलीलाके सद्व्वासनाके प्रकरणमें भगवत्प्रसादवश सफल काया वाणी और मन के भावोंका निरूपण तथा सद्व्वासनाके मूलतत्त्व श्रीहरिद्वारा दुर्वासनाके मूल ऐसे त्रिपुरोंके विनाशका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(ऊतिलीलाके अन्तर्गत ११-१५ अध्यायोंवाला तृतीय मिश्रवासनाका प्रकरण)

इस प्रकरणमें भी पुनः पांच ही अध्याय हैं :

(११) ऊतिलीलाके मिश्रवासनाके प्रकरणमें मिश्रवासनावाले जीवात्माकी असद्वासनाके निवर्तक कर्मके निरूपणमें साधारणतया सभी धर्मोंका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(१२) ऊतिलीलाके मिश्रवासनाके प्रकरणमें मिश्रवासनावाले जीवात्माकी असद्वासनाके निवर्तककर्मके

प्रकरणमें ब्रह्मचर्याश्रम और वानप्रस्थाश्रम धर्मोंका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(१३) ऊतिलीलाके मिश्रवासनाके प्रकरणमें मिश्रवासनावाले जीवोंमें से असद्वासनानिवर्तक संन्यासाश्रमके धर्मका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(१४) ऊतिलीलाके मिश्रवासनाके प्रकरणमें मिश्रवासनावाले जीवमें असद्वासनाके निवर्तक गृहस्थाश्रमके धर्मके निरूपणार्थ देश-काल आदिके निर्णयपूर्वक बाह्यदोषोंके निवर्तक धर्मका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

(१५) ऊतिलीलाके मिश्रवासनाके प्रकरणमें मिश्रवाले जीवोंमें असद्वासना दूर करनेवाले कर्मोंके निरूपणमें गृहस्थाश्रमके धर्मों दिखलानेको अन्तःकरणके दोषोंके नाशक साधनोंका निरूपण इस अध्यायमें किया गया है.

००००००+००००००

(अष्टमस्कन्धार्थ मन्वन्तरलीला)

अष्टमस्कन्धमें मन्वन्तरलीलाका निरूपण किया गया है. 'मन्वन्तर'पदका अर्थ सद्धर्म होता है. अतः मन्वन्तरधर्मोंके प्रवर्तकतया सद्धर्मका निरूपण इस स्कन्धमें वर्ण्यविषय है. सप्तमस्कन्धमें जिस कर्मवासनाका निरूपण किया गया था उन वासनाओंका दहन सद्धर्मवशात् होता है. प्रकृतिजन्य गणोंकी संख्या २४ होनेके कारण इन चौबीस प्राकृत गणोंमें उत्पन्न होनेवालेकी वासनाओंका मन्वन्तररूप सद्धर्मके कारण विनाश होता ही है, यह दिखलानेको इस स्कन्धके अन्तर्गत ४ प्रकरणोंमें २४ अध्याय समायोजित किये गये गये है.

(प्रकरणार्थ)

इस मन्वन्तरलीलाके प्रसंगमें सद्धर्मोंके निरूपणमें प्रमुखतः चार बातें समझायी गयी हैं : १.प्रथम प्रकरणमें आपद्में श्रीहरिका स्मरणरूप सद्धर्म २.सम्पद्में दानरूप सद्धर्म ३.स्वयं जो वचन कहे हों उनका निर्वाह यानि सत्यवचनरूप सद्धर्म और ४.उल्लिखित तीनों धर्मोंके वक्ताके रूपमें भगवान्के मत्स्यावतारका वर्णन. इस तरह चार प्रकरण यहां इस स्कन्धमें योजित हुवे हैं.

(अध्यायार्थ)

(१) इसके अन्तर्गत श्रीहरिका स्मरण चारों पुरुषार्थोंका साधक होता है, यह दिखानेको प्रथम प्रकरणमें चार अध्याय हैं.(२) दानकर्ता और प्रतिग्रहीता के प्राकृत स्वभावकी घटक प्रकृतिकी गुणत्रयीके परस्पर संमिश्रणके वश नौ प्रकार और एक गुणातीत प्रकार यों कुल दस प्रकारके बनते हैं. अतः दान भी दस प्रकारका हो सकता होनेसे द्वितीय प्रकरणमें दस अध्याय समायोजित हुवे हैं. (३) तृतीय प्रकरणमें अपने

द्वारा कही गयी बातको निभानेके प्रसंगमें बलिराजाने स्वयंद्वारा प्रतिश्रुत दान दे कर अपने वचनकी सत्यता निभायी. यह त्रिगुणात्मिका प्रकृतिके गुणोंके परस्पर संमिश्रणवश जो नौ प्रकार होते हैं तदनुरूप नौ अध्याय यहां समायोजित हैं. यहां निजवचनकी सत्यताका निर्वाह अर्थात् सद्धर्मके अंगतया दान निरूपित हुवा है. जबकि पूर्वप्रकरणमें दान अंगीके रूपमें प्रतिपादित किया गया था. यों प्रतिपाद्यके प्रभेदवश दोनोंमें वर्णित दानोंमें एकवद्भाव नहीं सोच लेना चाहिये.^(४) इन सद्धर्मोंके उपदेशक भगवान्के मत्स्यावतारके एकविध होनेके कारण चतुर्थ प्रकरणमें केवल एक अध्याय ही समायोजित हुवा है. यों कुल मिला कर “४+१०+९+१=२४” अध्यायोंका योग चार प्रकरणोंमें समायोजित हुवा है.

(मन्वन्तरलीलाके अन्तर्गत १-४ अध्यायोंवाला आपद्में श्रीहरिस्मरण सद्धर्मका प्रथम प्रकरण)

(१) आपदाओंमें श्रीहरिके स्मरणके प्रकरणमें उपनिषदर्थोंकी अनुसन्धानरूपा भगवत्स्मृतिद्वारा मनुके प्रतिबन्धोंका निवारण हुवा और अतएव मनुको तपोरूप धर्म सिद्ध हुवा. क्योंकि धर्मबाध करनेपर क्लेश होता है यह दिखलानेको बीचमें गजेन्द्रकथा सूचित की गयी और उसके बारेमें प्रश्न भी इस प्रथम अध्यायमें वर्णित हुवा है.

(२) आपदाओंमें श्रीहरिके स्मरणके प्रकरणमें गजेन्द्रको अपने पूर्वजन्ममें अनुष्ठित धर्मके कारण श्रीहरिकी स्मृति और साधनक्लेशमें कारणीभूत सकाम अर्थकी सिद्धि का निरूपण द्वितीय अध्यायमें किया गया है.

(३) आपदाओंमें श्रीहरिके स्मरणके प्रकरणमें गजेन्द्रद्वारा पूर्वजन्ममें सीखे हुवे स्तोत्रद्वारा भगवान्की शरणागतिरूपा रक्षारूप फलका प्रदायी कामकी सिद्धिका निरूपण तृतीयाध्यायमें किया गया है.

(४) आपदाओंमें श्रीहरिके स्मरणके प्रकरणमें भगवत्स्मृति और भगवत्प्रपत्ति रूपा भक्तिके कारण सन्तुष्ट भगवान् द्वारा मुक्तिकी सिद्धिका निरूपण चतुर्थ अध्यायमें किया गया है.

(मन्वन्तरलीलाके अन्तर्गत ५-१४ अध्यायोंवाला सम्पद्में दानरूप सद्धर्मका द्वितीय प्रकरण)

(५) सम्पदाओंमें दानरूप सद्धर्मके प्रकरणके अन्तर्गत दानहेतुओंके निरूपणार्थ उसके हेतुतया साधनरूप भगवान्का निरूपण पांचवें अध्यायमें किया गया है.

(६) सम्पदाओंमें दानरूप सद्धर्मके प्रकरणके अन्तर्गत दानहेतुओंके निरूपणार्थ उनके हेतुतया साधनवर्गके देवों और असुरों का निरूपण छठे अध्यायमें किया गया है.

(७) सम्पदाओंमें दानरूप सद्धर्मके प्रकरणके अन्तर्गत दानहेतुओंके निरूपणार्थ उसके हेतुतया प्रतिबन्धोंके निवारक श्रीमहादेवका निरूपण सातवें अध्यायमें किया गया है.

(८) सम्पदाओंमें दानरूप सद्धर्मके प्रकरणके अन्तर्गत दानहेतुओंके निरूपणार्थ सभी रत्नादिरूप देयपदार्थोंकी उत्पत्तिका निरूपण आठवें अध्यायमें किया गया है.

(९) सम्पदाओंमें दानरूप सद्धर्मके प्रकरणके अन्तर्गत दानरूपके निरूपणार्थ अपात्र ऐसे दैत्योंके वंचन और पात्ररूप देवोंको अमृतदानरूप लीलाका निरूपण नौवें अध्यायमें किया गया है।

(१०) सम्पदाओंमें दानरूप सद्धर्मके प्रकरणके अन्तर्गत दानरूपके निरूपणार्थ मोक्षके आध्यात्मिक रूप अमृत चेतनाका देवोंके लिये उपकारक जीर्णताका निरूपण दसवें अध्यायमें किया गया है। फिरभी भगवान्के उपकारको भूल कर अपने अहंकारके वशीभूत हो कर युद्धमें प्रवृत्त होनेवाले देवताओं अमृत चेतन होनेपर भी उन देवताओंमें कृतघ्नताकी शंका उत्पन्न हुयी और ऐसी अमृतता देवगणोंको पच नहीं पायी अतः देवताओंकी दानवोंके साथ युद्धमें पराजयका वर्णन किया गया और उस अहंकारकी निवृत्ति होनेपर भगवान्द्वारा किये गये उपकारकी स्मृति लौटनेपर दैन्यभाववश भगवान् प्रकट हुवे और उन्होंने दैत्योंको मार कर कृतघ्नतावश अमृत न पच पानेका दोष निवृत्त देवोंको विजयी बनाया।

(११) सम्पदाओंमें दानरूप सद्धर्मके प्रकरणके अन्तर्गत दानफलके निरूपणार्थ अमृतपानकर्ता देवगणोंका दैत्यहननार्थ सक्षम बनना स्वर्ग पानेमें भी सक्षम होनेका निरूपण ग्यारहवें अध्यायमें किया गया है।

(१२) सम्पदाओंमें दानरूप सद्धर्मके प्रकरणके अन्तर्गत दानफलके निरूपणार्थ जो भगवदाश्रित दैत्य होते हैं उन्हें उपायान्तरका उपदेश और एतावता देवोंको पुनः उपद्रवकी सम्भावनासे बचानेको अमृतके दाता भगवान्द्वारा महादेवजीको मोहित करनेकी कथाका निरूपण बारहवें अध्यायमें किया गया है।

(१३) सम्पदाओंमें दानरूप सद्धर्मके प्रकरणके अन्तर्गत दानफलके निरूपणार्थ सप्तमादि आठ मन्वन्तरोंके निरूपणमें अमृतपायी देवोंकी सभी मन्वन्तरोंमें अमृतावेशवश अक्षयताका निरूपण तेरहवें अध्यायमें किया गया है।

(१४) सम्पदाओंमें दानरूप सद्धर्मके प्रकरणके अन्तर्गत मनु और मनुपुत्रों से प्रति मन्वन्तरोंके युगान्तमें भीषण कर्मोंके निरूपणमें सभी कुछ भगवान्के आधीन है यह निरूपित किया गया है चौदहवें अध्यायमें।

(मन्वन्तरलीलाके अन्तर्गत १५-२३ अध्यायोंवाला अपने दिये वचनकी सत्यताको निभानेके सद्धर्मका तृतीय प्रकरण)

(१५) स्वयं दिये वचनकी सत्यताके निर्वाहके प्रकरणमें हेतुके निरूपणार्थ विप्रोंकी कृपाके कारण प्राकरणिक दाता बलिराजाकी स्वर्गविजयरूप दानसामर्थ्यका निरूपण पंद्रहवें अध्यायमें किया गया है।

(१६) स्वयं दिये वचनकी सत्यताके निर्वाहके प्रकरणमें हेतुके निरूपणार्थ स्वयं भगवान्को बलिराजाके पास याचनार्थ क्यों जाना पड़ा उसके वर्णनार्थ अदितिने भगवान्को सन्तुष्ट करनेवाले पयोव्रतरूप कर्मका अनुष्ठान किया उसका निरूपण सोलहवें अध्यायमें किया गया है।

(१७) स्वयं दिये वचनकी सत्यताके निर्वाहके प्रकरणमें हेतुके निरूपणार्थ अदितिके उक्त व्रतसे सन्तुष्ट भगवान्की प्रसन्नताका निरूपण सत्रहवें अध्यायमें किया गया है।

(१८) स्वयं दिये वचनकी सत्यताके निर्वाहके प्रकरणमें बलिराजाके पास भूमिदानकी याचनाके लिये जाना तदर्थ पहले अदितिके गर्भसे से छलनार्थ प्रकट हो कर वामनरूप धारण कर बलिराजाके यज्ञमें

जाना और बलिराजाका उन्हें पहचान न पानेका वृत्तान्त इस अष्टारहवें अध्यायमें प्रतिपादित किया गया है.

(१९) स्वयं दिये वचनकी सत्यताके निर्वाहके प्रकरणमें दानदाता बलिराजाकी भगवान् द्वारा प्रशंसापूर्वक तीन पैँड भूमिदानकी याचना और भृगुऋषिके वचनके आधारपर बलिराजा भगवान्को पहचान पाये यह वृत्तान्त उन्नीसवें अध्यायमें निरूपित किया गया है.

(२०) स्वयं दिये वचनकी सत्यताके निर्वाहके प्रकरणमें भृगुऋषिद्वारा बलिराजाको यह जताना कि दैत्योंके वैरी होनेके कारण भगवान् बलिराजाके सर्वस्वका अपहरण करनेकेलिये पधारे हैं यह जान लेनेके बावजूद धैर्य रख कर अपने गुरुके वचनोंका उल्लंघन करके भी विश्वरूप धारण करनेवाले भगवान्को बलिराजाका अपने दिये वचनके निर्वाहार्थ दानका निरूपण इस बीसवें अध्यायमें किया गया है.

(२१) स्वयं दिये वचनकी सत्यताके निर्वाहके प्रकरणमें दानफलके निरूपणार्थ अन्यथा कृतिवश बलिराजाके बन्धनका निरूपण इक्कीसवें अध्यायमें किया गया है.

(२२) स्वयं दिये वचनकी सत्यताके निर्वाहके प्रकरणमें भगवान्के साक्षात्कार होने जानेपर तो आत्मा-आत्मीय सकल पदार्थोंका समर्पण कर देना ही उचित होता फिरभी अहन्ता-ममताके वश अपने वचनको सत्य सिद्ध करनेके अहंकार रखते हुवे वामनका साक्षाद् भगवान् जान लेनेके बावजूद अन्यथा दान करना, भगवान्द्वारा बलिराजाके सैनिकोंने जो उपद्रव किया उस लोकसिद्ध अपराधको निमित्त बना कर बलिराजामें दैन्यपूर्वक भगवदीयता सम्पादित करनेको अहंकारादि दोषोंके निवर्तक दण्डात्मक अनुग्रहरूप बन्धन, दानादि लौकिक धर्मोंसे स्वर्गादि प्राप्तिरूप फल भी अन्ततः तो बन्धनरूप ही होता है यह जतानेको दानफलतया बन्धनका निरूपण किया गया. साथ ही साथ स्वयं दिये वचनकी सत्यताके निर्वाहके प्रकरणमें दानफलके निरूपणार्थ यथार्थकरणके कारण बलिराजाको बन्धनसे मुक्ति और सुदुर्लभ वरदानका निरूपण भी किया गया है. इस तरहके भगवान्की लीलाके कारण भगवान्के बारेमें असूया रखे बिना दण्डको भी अनुग्रह मान लेनेके दैन्यके वश आत्मसमर्पण शरणागति यथार्थकरण संसारसे भी मुक्ति, आधिव्याधिके उपद्रवोंसे रहित सुख, लोकाधिपतियोंद्वारा अपराजेयता, चक्रद्वारा आज्ञा उल्लंघनकारियोंका नाशन ऐसी भगवत्कृत रक्षा, सदा भगवद्दर्शनका दुर्लभलाभ और आसुरभावकी निवृत्ति जैसे सुदुर्लभ वरोंका निरूपण इस बावीसमें अध्यायमें किया गया है.

(२३) स्वयं दिये वचनकी सत्यताके निर्वाहके प्रकरणमें दानफलके निरूपणार्थ सावर्णिमन्वन्तरमें अभिलषित स्वर्गसिद्धिके लिये बलिराजाको सुतलमें स्थापित करनेको यज्ञरूप जो पूर्वमें समारब्ध कर्मानुष्ठान था उसकी भी संसिद्धिका निरूपण इस तैवीसमें अध्यायमें किया गया है.

(मन्वन्तरलीलाके अन्तर्गत २४वें अध्यायवाला सद्धर्मोंके वक्तावाला चतुर्थ प्रकरण)

(२४) सद्धर्मके वक्ताके प्रकरणमें उक्त त्रिविध धर्मोंके वक्ताके रूपमें भगवान्के मत्स्यावतारका निरूपण इस चौबीसवें अध्यायमें किया गया है.

भागवतार्थ निबन्ध गत प्रकरण - अध्यायार्थ ।
गोकुलराय-घनश्यामजी-रचित-ग्रन्थबोधार्थ ॥
हिन्दी भाषा में रचा एक काय सरलार्थ ।
श्याममनोहरकी कृति निजमतिके शोधार्थ ॥